International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 5 || May 2026 || PP. 22-29

पंजाबी पाठ्य-पुस्तक के माध्यमिक स्तर के भारतीय सांस्कृतिक विविधता और समावेशन के संदर्भ में

गुरविंद्र सिँह आनंद
पीएचडी शोधार्थी
केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
gsikh745@gmail.com
पर्यवेक्षक - प्रोफेसर राघवेंद्र प्रपन्ना

शोध संक्षेपिका

पृष्ठभूमि - *विद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुनर्गठित किया गया इसमें चार स्तर 5+3+**3**+4 में से तीसरे स्तर पर अर्थात माध्यमिक विद्यालय स्तर कक्षा 6 से 8 तथा आयु सीमा 11 से 14 वर्ष के विद्यार्थियों के पंजाबी पाठ्य-पुस्तक के भारतीय सांस्कृतिक विविधता और समावेशन के संदर्भ में चर्चा करेंगे।* ***उद्देश्य -*** *भारतवर्ष में संस्कृति का समृद्ध भंडार देखने को मिलता है जहां पर विविधता से परिपूर्ण अनेक संस्कृतियों का समावेश है जो हमें अतुल्य भारत द्वारा परिभाषित करती है। आठवीं अनुसूची के अंतर्गत आने वाली पंजाबी भाषा के माध्यमिक विद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत विभिन्न संस्कृतियों से संवाद किस प्रकार हमें अतुल्य भारत की ओर ले जाता है। जिसे जानने व जॉचने की कोशिश करेंगे।* ***विधि -*** *गुणात्मक व दस्तावेज विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।* ***परिणाम -*** *पंजाबी भाषा की पाठ्य-पुस्तक के अंतर्गत विविधता और समावेशन से किस प्रकार वार्तालाप स्थापित किया जाता जो हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत संस्कृति के संवर्धन की ओर ले जाता है लोकतांत्रिक भारत में विविधता में एकता की अंतर्गत आने वाली विभिन्न भारतीय भाषा परिवार की विभिन्न संस्कृतियों के रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र, आभूषण, त्यौहार आदि से जुड़ने का मौका देता है। अनेकता में एकता के समावेश को किस प्रकार ओर अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है*

मुख्य शब्द- *संस्कृति, विविधता, समावेशन, पंजाबी, भाषा, पाठ्य-पुस्तक,*

Date of Submission: 28-04-2026 Date of acceptance: 06-05-2026

1.परिचय - नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिसको चार भागों में बांटा गया है इसके अंतर्गत भाग 3 अर्थात अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दों के अध्याय नंबर 22 में भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन पर आधारित है किसी अध्याय की अनुशंसाओं को पंजाबी पाठ्य-पुस्तक के माध्यमिक स्तर के भारतीय सांस्कृतिक विविधता और समावेशन के संदर्भ में जानने व जॉचने का प्रयास करेंगे। साथ ही साथ माध्यमिक स्तर की पाठ्य पुस्तकों में किन-किन संस्कृतियों का समावेश है उसको देखने की कोशिश करेंगे, जो हमारे भारत को अतुल्य भारत बनाती है।

2.साहित्य की समीक्षा - माध्यमिक स्तर की पंजाबी की पाठ्य पुस्तक कक्षा - 6, 7, 8 के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संस्कृति मुख्य बिंदुओं के अंतर्गत अपनेपन की पहचान व संस्कृति का मुख्य माध्यम कला है, जब हम संस्कृति के संवर्धन के दृष्टिकोण से पंजाबी की माध्यमिक स्तर की पाठ्य पुस्तकों को देखने का प्रयास करते हैं। भारतवर्ष विविधता में एकता से परिपूर्ण है यहां पर विभिन्न संस्कृतियों का समावेश है जो अनेक संस्कृतियों का इतिहास है जो हजारों वर्षों के परिणाम का स्वरूप है, "एक भारत श्रेष्ठ भारत" के तहत के अंतर्गत देश के 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी यहां पर भारत की समृद्ध विविधता व विरासत का प्रत्यक्ष ज्ञान तथा ज्ञानवर्धन करने के लिए इन स्थलों और उनके इतिहास, विज्ञान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञान आदि का अध्ययन करने के लिए भेजेंगे।

आज के युग में विद्यार्थियों में अपनी पहचान, अपनेपन के भाव और अन्य संस्कृतियों और उनसे रूबरू होने का भाव पैदा करने के लिए भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को समावेश व मजबूत करने की आवश्यकता महसूस की जाती है ताकि वे सब अपने सांस्कृतिक गौरवशाली इतिहास से रूबरू हो सके। तथा भाषा को भी इसके अंतर्गत जोड़ा गया है जिसमें हमें साहित्य, नाटक, संगीत, फिल्म जो भाषा आधारित संस्कृति की धरोहर है, भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान व देखभाल न मिलने के कारण पिछले 50 वर्षों में हमने 220 भाषाओं को खो दिया है जिसे यूनेस्को ने अपनी रिपोर्ट के अनुसार 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तपप्राय घोषित कर दिया गया है।

2.1.विस्तृत चर्चा

पंजाबी के पाठ्य पुस्तक के माध्यमिक स्तर की कक्षा 6 से 8 तक के अंतर्गत कुल अध्यायों की संख्या 48 है जिसमें से 15 काव्य रूप, अर्थात पद रचना है तथा 33 गद्य रूप जिसमें कहानी,नाटक, जीवनी, यात्रा इत्यादि साहित्यिक रूपों का समावेश देखने को मिलता है।

कोठारी आयोग 1964-66 से पहली शिक्षा नीति 1968, दूसरी शिक्षा नीति 1986/1992 तथा अब नई आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह सफर त्रिभाषा सूत्र से बहुभाषा तक का सफर तय करता है तथा इसी संदर्भ में जगदीश कौर द्वारा लिखित जन्मदिन मुबारक एक वार्तालाप है जिसमें मां बोली दिवस जो 21 फरवरी का उल्लेख हमें मिलता है तथा इसमें विभिन्न त्यौहार जैसे बैसाखी क्रिसमस, राष्ट्रीय त्यौहार तथा अन्य दिवसों जैसे स्वतंत्रता दिवस, अध्यापक दिवस, स्त्री दिवस, बाल दिवस, शिक्षक दिवस आदि के बारे में जानकारी मिलती है। इसी क्रम में कक्षा 7 की कविता मां बोली पंजाबी जो जसवंत सिंह सेखों द्वारा रचित है के अंतर्गत मातृभाषा के महत्व व संबंध का वर्णन मिलता है। तथा जो हमें लोकनाच जैसे झूमर गिद्दे भांगड़ा, लोक साज जैसे ढोल, पांच नदियों के इतिहास तथा उस समय के लिखे साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराता है जैसे किस्सा काव वारिस शाह द्वारा रचित हीर का वर्णन मिलता है। देश-सेवा, देश-भक्ति का रूप मिलता है। इसी क्रम में जहां पर मातृभाषा को महत्व चाहे कोठारी आयोग को चाहे हमारी शिक्षा नीतियों पहली दूसरी तीसरी सभी ने मातृभाषा के महत्व को बहुत महत्वपूर्ण बताया है इस पर आधारित एक कविता मां बोली दा सागर जो अमर सूफी के द्वारा रचित है आठवीं कक्षा के पाठ्य पुस्तक माणक माला भाग 3 के अंतर्गत आती है, इस कविता के द्वारा कवि ने मातृभाषा के योगदान तथा उसकी अहमियत को अपनी कलाम के द्वारा शब्द रूपों के जादू रूप में पेश किया है। कवि ने मातृभाषा की तुलना मां से की है, और मातृभाषा को मां की तरह ही चाहते हैं मान सम्मान देते हैं, कवि अपनी कविता के द्वारा कहते हैं की बहुत भाषाओं का ज्ञान होना अच्छी बात है इसमें कोई अहंकार नहीं है परंतु

बोलते समय अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना ऐसे लगता है जैसे वह एक निराले ढंग से अपनी मां की पूजा कर रहे हैं साथ ही साथ लोकगीतों तथा अध्यात्म गुरबाणी को सुनकर आनंद की अनुभूति करते हैं, कभी कहता है की मां बोली की कृपा से भी अनेक प्रकार की बुलंदियां पर पहुंचा है तथा मातृभाषा का कर्ज बहुत बड़ा होता है तथा वह ताकतवर होकर इसे धीरे-धीरे चुकता रहेगा, तथा कवि यह भी कहता है कि वह कागजों पर सुंदर लिख लिख कर हर समय अपनी कलम चलता रहता है और उसकी मां की इच्छा है कि उसकी पंजाबी मातृभाषा दुनिया की सबसे अच्छी भाषा की श्रेणी में आए, और हम सब हेलो हाय की स्थान पर सत श्री अकाल के द्वारा आपस में संबोधन करें। मातृभाषा सागर बहुत विशाल है जिसमें अनेक शब्द रूप में खजाना है और कवि चाहता है कि कि वे इस सागर में गोता लगाकर सागर से अनेक प्रकार के रतन, मोती, खजाने निकले। कवि तीन मांओं के बारे में जिक्र करता है जननी पैदा करने वाली अर्थात जन्म देने वाली, दूसरा बोली यानी मातृभाषा, तीसरा धरती मां जहां हम रहते हैं अर्थात हमारी धरती माता हमारा भारत वर्ष हमारा प्रिय देश है। अंतिम में कवि अपना शीश सिर झुका कर तीनों मां के पैर छूकर आशीर्वाद लेना चाहता है।

पाठ ***वीर दा विआह*** जो *जगदीश कौशल* द्वारा रचित एक काव्य रचना है जिसमें वे हमारे समाज के महत्वपूर्ण संस्कार से परिचित कराते हैं। जो हमें रीति रिवाज संस्कार लोगधारा लोकगीत आदि से जोड़ता है। लोक आभूषण जैसे सहरा, कंगन, कलीरे आदि का चित्र दूसरी ओर लोक साज ढोल, लोकनाच, लोकगीत जैसे बोलियां तथा रिश्ते नाते जैसे वीर, भैया- भाभी आदि से हमारे संस्कृति के अभिन्न अंगों से जान पहचान करवाते हैं।

एक ओर काव्य रूप पाठ ***कुदरत दी खेल*** कविता जो गुलवंत फारिग द्वारा रचित है इसमें हमें भाईचारे प्यार व लोक त्यौहार जैसे ईद, बैसाखी, दिवाली, होली का महत्व अपनी कविता के द्वारा कुदरत के रंगों में पिरोकर जैसे सर्दी गर्मी पर्वत जंगल नदियां अद्भुत दृश्य रूप में पेश करता है। संस्कृति से संवाद में हमारे त्यौहार हमारे रीति रिवाज हमारे अनुष्ठान बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं इससे हमारे भाईचारे प्यार को बढ़ावा मिलता है। इसी क्रम में कक्षा सातवीं के अध्याय में ***होली*** कविता जो *रतन सिंह ढिल्लों* द्वारा रचित है। होली त्यौहार भाईचारे का प्रतीक है रंगों का त्यौहार है। जो नस्ल भेद को मिटाता है तथा मथुरा की होली का मुकाबला पूरे भारतवर्ष में नहीं है, दूसरी ओर बरसाने तथा हरियाणा की लट्ठमार होली का भी अलग रंग है, तथा इसके अंतर्गत लोक साथ का भी जि`क्र है जैसे ढोल, नगाड़े, चिमटे, छज्ज आदि। इसी सफर में एक लोकगीत पाठ के अंतर्गत ***सुंदर मुंदरीये*** नामक काव्य रचना है लोहड़ी के त्यौहार से तालुकात रखता है और साथ ही साथ हमारे लोकगीतों तथा लोक कथाओं को भी जीवंत रखता है, जो संस्कृति के पुराने शब्दों को भी जीवन पर रखता है जो हमारे तत्सम व तद्भव दोनों शब्दों के विशाल भंडार के रूप में प्रस्तुत करता है।

कक्षा 8 के पाठ ***नवरोज*** लेख जो *सरनजीत कौर* द्वारा लिखित है, त्यौहार हमारे जीवन में खास महत्व रखते हैं जो जीवन को आनंद व खुशियों से भर देते हैं, वहीं ज्ञान और ऊर्जा भी देते हैं यह हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है इन त्योहारों में पारसी भाईचारे से संबंधित एक सभ्यचारक नवरोज त्यौहार है जो पारसी भाईचारे की एक जीती जागती तस्वीर है, नवरोज शब्द नव तथा रोज दो शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ है नया दिन इसको नवरोज या जमशेदी के नाम से भी जाना जाता है, नवरोज का भाव ईरानी कैलेंडर के पहले महीने के पहले दिन से है जो हर साल 21 मार्च को मनाया जाता है। जैसे भारतवासी चेत महीने से और अन्य दुनिया पहली जनवरी से, को नए साल के रूप में मानती है, इस त्यौहार से 10-15 दिन पहले ही घरों की सफाई, रंग-रोगन और घरों का श्रृंगार, बाजार में खूब रौनक और लोगों की खरीदारी चालू हो जाती है, इस दिन अग्नि मंदिर में अग्नि की पूजा की जाती है, इस त्यौहार के मौके पर खाने की मेज का भी एक विशेष आकर्षण होता है इसे विशेष तौर पर

कुछ संकेतक वस्तुओं द्वारा सजाया सावरा जाता है सबसे पहले अंकुरित अनाज रखते हैं जो नए जीवन, नए जन्म, नई शुरुआत का संकेत देता है सिरका यह जीवन में ठहराव और सब्र का महत्व बताता है, लहसुन यह एक अच्छी सेहत की तरफ इशारा करता है सेब यह खूबसूरती की ओर, हवा यह मिठास और एकता का प्रतीक है मसाले तीखेपन और आगे बढ़ाने की सोच को प्रेरित करता है।

दिल्ली दा सांझा मेला लेख जो *डॉक्टर हरप्रीत सिंह* द्वारा रचित एक गद्य रचना , भारत में अलग-अलग धर्म और भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं जो अपनी अलग संस्कृति, सभ्यता और भाषा की वजह से जाने जाते हैं ये मेले और त्यौहार सबको एक सूत्र में बांधकर रखते हैं, इन मेलों और त्योहारों के पीछे लोगों का अपना विश्वास जुड़ा होता है जैसे पंजाब के मेले, जिसमें बैसाखी का मेला, माघी का मेला, बसंत का मेला प्रसिद्ध है इस तरह दिल्ली ने भी मेलों के कारण अपनी अलग पहचान बना रखी है फूल वालों की सैर दिल्ली का एक प्रसिद्ध मेला है यह मेला हर साल सितंबर अक्टूबर मेहरौली में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, इस मेले का संबंध सांझी संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा है यह मेला हिंदू और मुसलमान दोनों के लिए आपसी भाईचारे का प्रतीक है।

इसके अगले अध्याय ***बच्चिआ दी जुगत*** कहानी *डॉक्टर शारदा कुमारी* द्वारा रचित, इस कहानी में लेखिका विद्यार्थियों को लोक खेल जैसे छुप्पन-छुपाई, लुकन मिट्टी, कबड्डी, खोखो आदि से परिचित कराती है जिससे बच्चे मस्ती आनंद का अनुभव करते थे तथा शारीरिक रूप से चुस्त दुरुस्त भी रहते थे यह आउटडोर गेम है जो बच्चों को अप्रत्यक्ष रूप से टीमवर्क की भी शिक्षा देता है। इसी क्रम में पाठ ***पांडा पंडरिया*** लेख जो *हरदेव सिंह चौहान* द्वारा लिखित है इस अध्याय के अंतर्गत भी लोक खेलों के बारे में बताया गया है, कि कैसे छोटे लड़के लड़कियां किस प्रकार लुका छुपी का खेल किस प्रकार खेलते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत देश के 100 प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों की पहचान वह इतिहास से जुड़ेगा इसी क्रम में पाठ ***दिल्ली*** जो कविता *हजारा सिंह गुरदासपुरी* द्वारा रचित है कवि ने दिल्ली के इतिहास को बखूबी इंद्रप्रस्थ से दिल्ली तक का सफर तथा तुर्की फारसी से अंग्रेजी तक का सफर और सुल्तानो, मुगलों, फिरंगियों से आजाद दिल्ली तब के सफर से जोड़ते हुए अपनी कविता के रूप में पेश करते हैं।

सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध तक का सफर और किस प्रकार पीपल के पेड़ के नीचे 6 साल की तपस्या के बाद निर्वाण प्राप्त करना और अष्टांग का वर्णन हमें पाठ *महात्मा बुद्ध* जीवनी जो कि *डॉक्टर जगजीत कौर* द्वारा लिखित है जो हमें जीवन में नैतिकता मूल्य आदर्श से परिचित कराता है तथा बौद्ध धर्म के सिद्धांत व उपदेशों का वर्णन करता है।

बड़ों का आदर तथा माता-पिता का स्नेह, प्यार, आशीर्वाद तथा गुरु शिष्य परंपरा तथा गुरु से ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया जाता है तथा नैतिक मूल्यों से किस प्रकार जोड़ा जाता है यह सब हमें पाठ ***पते दी गल*** कविता जो *तरकश प्रदीप* द्वारा रचित से प्राप्त होता है।

उड़ीसा शहर की खूबसूरत स्थलों का वर्णन, समुद्र के किनारे सूरज का चढ़ना व डूबना का मनमोहन दृश्य तथा 12वीं सदी के जगन्नाथ पुरी के मंदिर, रथ यात्रा, कोणार्क के सन टेंपल, गुरु नानक देव जी द्वारा उचारी आरती का इतिहास आदि का वर्णन पाठ ***एक यादगारी सफर*** यात्रा जो *तेजिंदर कौर* द्वारा लिखित गद्य रूप है। वहां के लोक पहनावा धोती कुर्ता, सूती साड़ियां, खाने में चावल मलका की दाल परवल की सब्जी पीने में कच्चे नारियल का पानी बहुत मशहूर है। जो हमारी विविधता से भारी संस्कृति से जोड़ता है। इतिहासक स्थलों के साथ-साथ

पर्यटक स्थल कितने ही खूबसूरत दीप, चिल्का झील आदि का वर्णन भी मिलता है। उड़ीसा की मातृभाषा उड़ीआ का ज़िक्र मिलता है।

सादे जीवन विच रूख लेख जो गुलवंत फ़ारिग द्वारा रचित है। जिसमें विभिन्न प्रकार के पेड़ों का वर्णन तथा पेड़ों के महत्व को बताया गया है जो हमें कहीं ना कहीं हमारी संस्कृति व प्रकृति से जोड़ते हैं हमारा पुरातन इतिहास जो कलमों द्वारा द्वारा लिखा जाता था वे कलमें पेड़ों के द्वारा बनाई जाती थी, अनेक दवाइयां, तेल, गोंद, रंग, रबड़ आदि इन्हीं की देन है। जीवन का सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण आधार ऑक्सीजन वह भी इन्हीं की देन है। कुछ जगहों पर आज भी पत्तल की प्लेट व चम्मचों का इस्तेमाल किया जाता है, केले के पत्ते पर खाना परोसा जाता है यह उनकी संस्कृति का अभिन्न अंग है, पुरातन समय से हम नीम को एक उपयोगी पेड़ के रूप में इस्तेमाल करते आ रहे हैं तथा नीम व बबूल की दातुन करना हमारे गांव में दैनिक क्रिया का हिस्सा है, बंगाली लोग दुर्गा पूजा के त्यौहार के दौरान केले के पेड़ को नई साड़ी पहनते हैं जो उनकी संस्कृति का प्रतीक है।

3. कार्यप्रणाली - डेटा विश्लेषण

गुणात्मक व दस्तावेज विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। माध्यमिक स्तर की पंजाबी की पाठ्य पुस्तक कक्षा 6 से 8 जिसको राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों खास कर कर नई आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत संस्कृति से संवाद को गुणात्मक विधि तथा डेटा विश्लेषण के द्वारा दृष्टिगोचर करने का प्रयास किया गया।

4. परिणाम और चर्चा

पंजाबी पाठ्य-पुस्तक के माध्यमिक स्तर के भारतीय सांस्कृतिक विविधता और समावेशन को किस प्रकार प्रदर्शित करती है। जो हमने पाठ्य पुस्तकों के विभिन्न विभिन्न पाठकों के अध्ययनों से अलग-अलग संस्कृतियों की विविधताओं और समावेशन का उदाहरण देखने को मिलता है। । शिक्षा के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं, भाषाओं, मूल्यों और ज्ञान-परंपराओं के साथ निरंतर, जीवंत और आलोचनात्मक संवाद स्थापित करना। लोकतांत्रिक भारत में विविधता में एकता की अंतर्गत आने वाली विभिन्न भारतीय भाषा परिवार की विभिन्न संस्कृतियों के रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र, आभूषण, त्यौहार इत्यादि वह से रूबरू होने का एक अवसर मिला है। अनेकता में एकता के समावेश ने किस प्रकार भारतवर्ष को अधिक सुदृढ़ किया है।

4.1. भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश जो पुरातन समय से लेकर आज के आधुनिक युग के ज्ञान परंपरा को एकत्रित करने की आवश्यकता है। जिसकी शाखाएं व जडें बहुत गहरी हैं। इस भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश हम सबको मिलकर करना होगा तभी भारतवर्ष एक ज्ञानवान तथा विकसित भारत के रूप में आएगा। इसके लिए हमें अपने अपने विषयों की पाठ्यपुस्तकों के जगत को भी इस ज्ञान परिवेश अनुसार देखने व जॉचने की आवश्यकता होगी।

4.2. भाषाएँ और सांस्कृतिक पहचान

पंजाबी भाषा की माध्यमिक स्तर की कक्षा 6 से 8 की पाठ्य पुस्तकों से भिन्न-भिन्न संस्कृतियों से हमारा परिचय कराया है जो न केवल उत्तर भारत बल्कि पूरे भारतवर्ष को आपस में सिमटे हुए हैं हमें और भी इस प्रकार के अध्याय को जोड़ने की आवश्यकता है जो हमें भारत की समृद्ध संस्कृतियों से जोड़ता है तथा भाषा संस्कृति की वाहक होती है; इसलिए यह नीति भाषा के माध्यम से संस्कृति से जुड़ाव को मजबूत करती है। आठवीं अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं के और अधिक देखभाल तथा उन्नत करने की आवश्यकता है क्योंकि भाषाऐं केवल वार्तालाप का माध्यम नहीं यह हमारी संस्कृति, परंपरा, रीति रिवाज तथा समाज का आईना है। जैसा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बताया गया है कि कैसे पिछले 50 वर्षों में हम अपनी लगभग 200 से अधिक भाषाओं को खो हो चुके हैं इस बात को यूनेस्को की रिपोर्ट में लगभग 197 भाषाओं को लुप्त घोषित किया गया है। भाषा सीखने के लिए कुशल शिक्षकों की संख्या में भी अत्यधिक कमी रही है। भाषा शिक्षण में सुधार के लिए अधिक अनुभव आधारित शिक्षकों की आवश्यकता है तथा भाषा में बातचीत और अंत क्रिया करने की योग्यता पर हमें केंद्रित होने की आवश्यकता है ना कि केवल साहित्य, शब्द भंडार और व्याकरण के बल पर। भाषाओं को और अधिक समृद्ध रूप में बातचीत व शिक्षण अधिगम के लिए प्रयोग में लाया जाना चाहिए।

4.3. कला, संगीत और हस्तकला का एकीकरण

संस्कृति के अंतर्गत कला, संगीत और हस्तकला का समावेश होना भी बहुत आवश्यक है। इन अध्यायों में कला संगीत तथा हस्तकला का रूप भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में देखने को मिलता है। आज के आधुनिक युग में तथा टेक्नोलॉजी के युग में कहे तो शहरी बच्चों के आउटडोर गेम खत्म से होते जा रहे हैं जिसके लिए हमें बच्चों को शारीरिक रूप से मजबूत बनाने के लिए भारी खेल अर्थात आउटडोर गेम का प्रचार प्रसार भी करना पड़ेगा जिसके लिए लोक खेलों को बढ़ावा देना होगा। लोक खेल - जैसे पकड़म पकड़ाई छुपाना छुपी खो खो गुल्ली डंडा आदि जिससे हमारे बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा तथा चुस्त रहा करता था तथा अप्रत्यक्ष रूप से टीमवर्क भी सीख करते थे जो आज के युग में अनुपस्थित होता जा रहा है आज के युग में इंडोर गेम के नाम पर खास करके मोबाइल चलन इंटरनेट की दुनिया ने हमें अकेलेपन, असहाय, निराशावाद दृष्टिकोण की ओर धकेलना शुरू कर दिया है तथा बर्दाश्त के लहजे को भी बहुत कम कर दिया है। स्थानीय कला रूपों तथा हुनर आदि को पाठ्यक्रम से जोड़ना इससे विद्यार्थी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को अनुभवात्मक रूप में समझते हैं, न कि केवल जानकारी के रूप में।

4.4. नैतिक और मानवीय मूल्य

हम किसी भी युग में जी रहे हो जब तक हमारे पास नैतिकता मानवीय मूल्य आदर्श का अभाव रहेगा तब तक हमें सकारात्मक समाज की संभावना से कोसो दूर रहेंगे। क्योंकि आज के युग में हम देखते हैं कहीं जगह पर शिक्षा का प्रचार प्रसार तो बहुत अधिक है। परंतु मानवीय मूल्यों के अनुपस्थिति में हम एक भ्रष्टाचार तथा अनैतिक कार्य करने वाले समाज की ओर अग्रसर होते हैं। बहुत जरूरी है कि हमारा एक दूसरे संस्कृत के प्रति आदर भाव तथा भाईचारे की भावना से होता करुणा विनम्रता आदि गुना से संपन्न होने की आवश्यकता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे भारतीय मानवीय दृष्टिकोण को विकसित करने की बात है।

4.5. स्थानीयता से वैश्विकता की ओर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्थानीयता से लेकर वैश्विकता की ओर अग्रसर होने की बात करती है जहां पर हमें अपने स्थानीय इतिहास, भूगोल, परंपराओं, रीति रिवाज आदि को सही स्थान तथा एक दूसरे से रूबरू तथा समावेश करते हुए विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाने की आवश्यकता है। यह संतुलन भारतीय संस्कृति को आत्मविश्वास के साथ वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करता है। सभी भारतीय भाषाओं और उनसे संबंधित स्थानीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण व प्रसार प्रचार के लिए हमें सभी भाषाओं और उनसे संबंधित कला संस्कृति को तकनीक आधारित प्लेटफार्म या पोर्टल आदि द्वारा दस्तावेज रूप में करने की आवश्यकता है। इस प्रकार के प्लेटफार्म या पोर्टल पर वीडियो रिकॉर्डिंग शब्दकोश तथा अन्य सामग्रियां होगी जो विभिन्न लोगों द्वारा भाषा बोलना कहानी सुनाना कविता पाठ करना नाटक खेलने लोक गायन एवं नृत्य आदि कलाओं से परिपूर्ण होंगे। इसके लिए देश करके लोगों के प्रयासों की आवश्यकता होगी तथा उन्हें आमंत्रित किया जाएगा जिससे वह तकनीकी प्लेटफार्म से जुड़ सकेंगे। क्योंकि आज का युग तकनीक का योग है तथा हमें वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए अपनी शिक्षा को, अपनी पाठ्य पुस्तकों को वैश्विक स्तर पर ले जाने की आवश्यकता है। ताकि हम अपनी संस्कृति परंपराओं का प्रचार प्रसार न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व भर में कर सकें। जो हमारे भारतवर्ष को एक विकसित देश की ले जाने में सहायक होगा। इसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं, कला एवं संस्कृति के अध्ययन के लिए सभी आयु के लिए छात्रवृत्ति की स्थापना की जानी चाहिए तभी भारतीय भाषाओं का समर्थन एवं प्रसार संभव होगा और जिन्हें हम नियमित रूप से प्रयोग करेंगे। सभी भारतीय भाषाओं में जीवंत कविताएं, कहानी, नाटक, लेख, जीवनी आदि का निर्माण कार्य को सुनिश्चित किया जा सके। इन सबके लिए हमें रोजगार को भी कुशल शिक्षकों के रूप में बढ़ाना होगा जिसके फल स्वरुप हमारी स्थानीयता से लेकर वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण पहचान होगी।

5. निष्कर्ष

पंजाबी भाषा के पाठ्य पुस्तक कक्षा 6 से 8 तक और नए पैटर्न में माध्यमिक स्कूल स्तर पर किया है। कुल 48 अध्याय में से 15 काव्य रूप है तथा 33 गद्य रूप जिसके अंतर्गत विभिन्न विधाओं का समावेश है। जो हमें विभिन्न भाषाओं से जुड़ती हैं साथ ही साथ अनेक संस्कृतियों से रूबरू होने का मौका देती है जिनके अंतर्गत हमें विभिन्न त्यौहार रीति रिवाज परंपराओं से संबंध स्थापित करना आसान हो जाता है तथा यह हमारे भारतवर्ष की समृद्ध संस्कृति का एक जीवंत उदाहरण पेश करती हैं जिसमें विभिन्न संस्कृतियों के अपने खान-पान, वेशभूषा, आभूषण, लोक खेलें, लोकगीत, ऐतिहासिक स्थल, धार्मिक स्थल, पर्यटन स्थल आदि का समूह समावेशित है यही सांस्कृतिक विरासत तथा प्राकृतिक हमारे देश की ऐसी संपत्ति है जो हमारे पर्यटन स्लोगन के अनुसार भारत को वास्तव में अतुल्य भारत द्वारा परिभाषित करती है इसी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, संवर्धन, प्रचार प्रसार आदि हमारे लिए सबसे पहली प्राथमिकता होना चाहिए क्योंकि हमारे देश की पहचान के साथ-साथ यह हमारी अर्थव्यवस्था के लिए भी बहुत उपयोगी है तथा हमारी संस्कृति ही हमारी एक अलग पहचान पूरे विश्व में स्थापित करता है। जो हमारी अनेकता में एकता का प्रतीक है। भारतीय सांस्कृतिक विविधता और समावेशन छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए उन्हें आधुनिक, तार्किक और वैश्विक नागरिक बनाने का प्रयास करती है।

संदर्भ / References (MLA 9th Edition)

[1]. **Government of India.** *National Policy on Education 1968*. Ministry of Human Development, 1968.

[2]. **Government of India.** *National Policy on Education 1986*. Ministry of Human Development, 1986.

[3]. **Ministry of Human Resource Development.** *National Policy on Education 1986*. Government of India, 1992.

[4]. **National Council of Educational Research and Training (NCERT).** *National Curriculum Framework for School Education 2000*. NCERT, 2000.

[5]. **National Council of Educational Research and Training (NCERT).** *National Curriculum Framework 2005*. NCERT, 2005.

[6]. **Nandra, I. S.** *Punjabi Bhasha Da Adhyapan*. Twenty First Century Publications, 2008.

[7]. **Government of India.** *National Policy on Education 2020*. Ministry of Human Resource Development, 2020.

[8]. **National Council of Educational Research and Training (NCERT).** *National Curriculum Framework for School Education 2023*. NCERT, 2023.

[9]. **State Council of Educational Research and Training (SCERT), Delhi.** *Manak Mala – Bhag 1: Punjabi Language Textbook for Class VI*. SCERT Delhi, 2023.

[10]. **State Council of Educational Research and Training (SCERT), Delhi.** *Manak Mala – Bhag 2: Punjabi Language Textbook for Class VII*. SCERT Delhi, 2023.

[11]. **State Council of Educational Research and Training (SCERT), Delhi.** *Manak Mala – Bhag 3: Punjabi Language Textbook for Class VIII*. SCERT Delhi, 2023.